इच्छाधारी नागराज

इच्छाधारी नागराज

लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त
कलानिर्देशक: प्रताप मुलीक
चित्रकार: चंदू
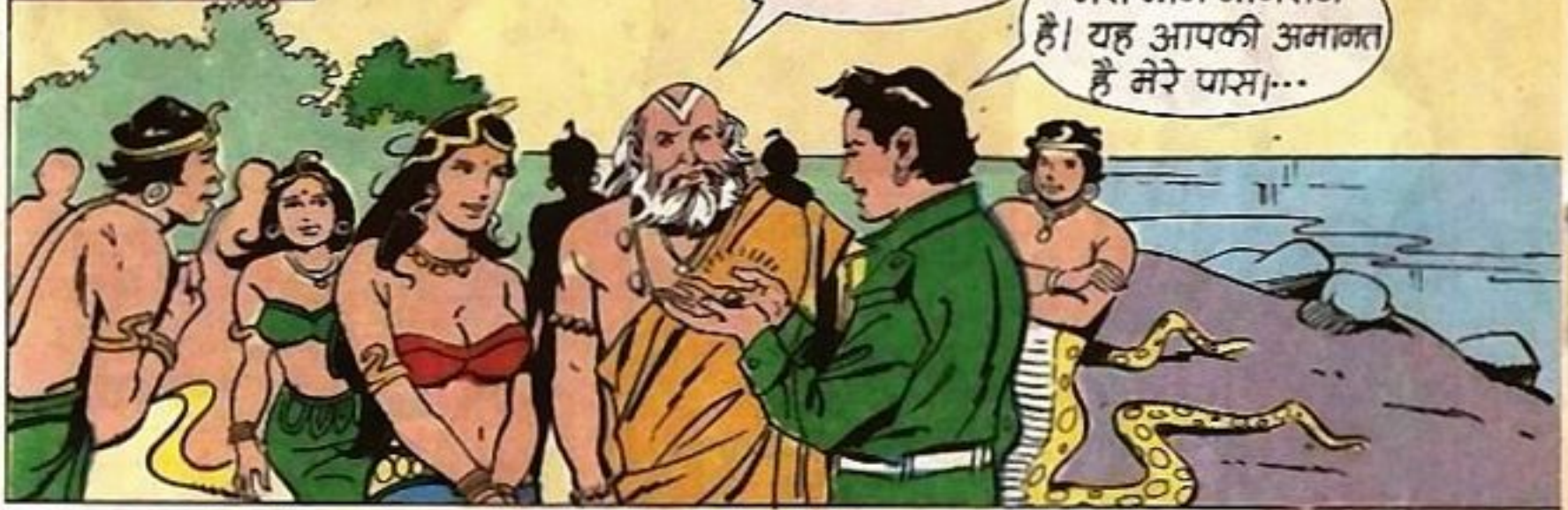
पुजारी बाबा ने पूजा प्रारम्भ की तो नागराज नागरस्सी की सहायता से नागदेवी के मस्तक तक पहुंच गया-

जैसे ही नागराज ने देवी के मस्तक पर मणि स्थापित की पवित्र गुफा घंटियों के मधुर स्वर से गूंज उठी-

फिर जैसे ही नागराज मणि स्थापित कर नीचे उतरा कि देवी के हाथ में थमी माला उसके गले में आ पड़ी-
ओह! माला!!
नागराज! हमारी देवी का आशीर्वाद तुम्हें मिल गया! हम चाहते हैं कि अब तुम यहीं रहो।
हां, इस द्वीप की बागडोर मैं तुम्हें सौंपता हूं, नागराज! आज से तुम यहां के राजा हो।

नागराज देवी के आगे नतमस्तक होता हुआ बुदबुदाया-
हे देवी-मां! अगर आप वास्तव में मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे आशीर्वाद दें कि इंसाफ के लिए लड़ते समय मेरे, कदम कभी न डगमगाएं।

उधर मणि स्थापना समारोह चल रहा था और इधर इच्छाधारी नागों के द्वीप पर मंडराता वह हैलीकॉप्टर-
??
जिसे एक नागमानव देख चुका था।
पाठक जानते हैं कि इस द्वीप पर केवल इच्छाधारी नागमानव ही रहते हैं।

नागमानव की सर्पीली निगाहें निरन्तर उस हैलीकॉप्टर का पीछा कर रही थीं-

नागमानव के देखते-देखते हैलीकॉप्टर जंगल की धरती की ओर बढ़ा-
??

और एक विस्फोट गूंज उठा-
धड़ाम!
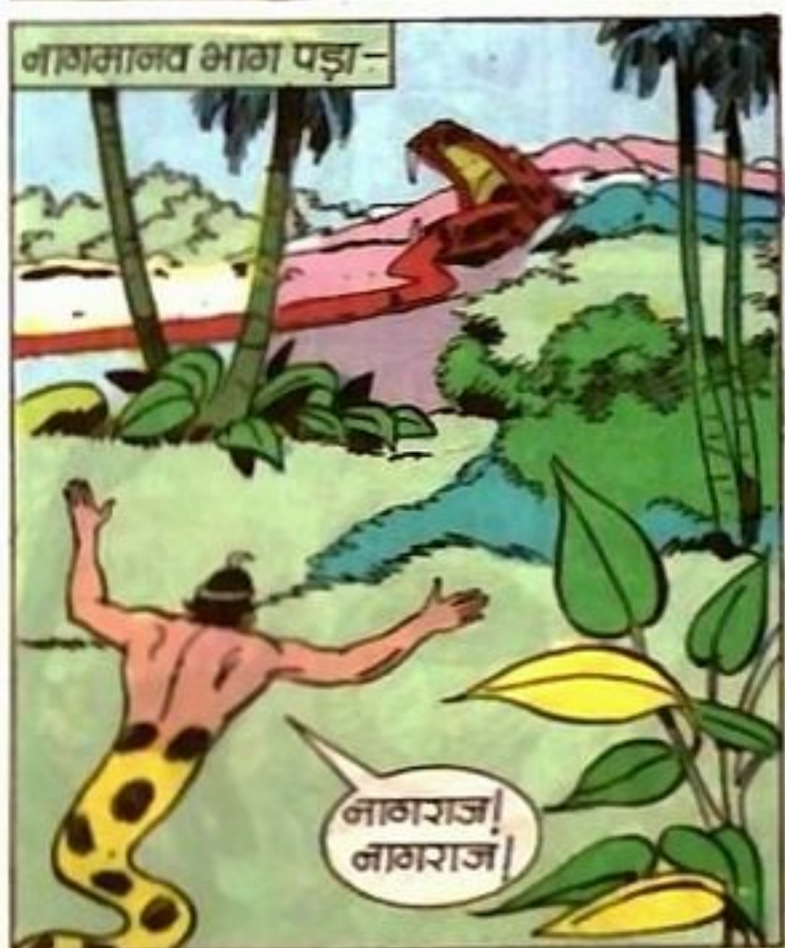
नागमानव भाग पड़ा-
नागराज! नागराज!

नागराज!
यह धमाका कैसा था?
धड़ाम!
देखना होगा। आओ मेरे साथ।

नागराज पुजारी बाबा और विसर्पी के साथ मन्दिर की पवित्र गुफा से बाहर निकला ही था कि–
??
??
नागराज! नागराज!
क्या बात है शूलकंट, यह धमाका कैसा था?

नागराज तक पहुंचते-पहुंचते शूलकंट पूरा मानव बन गया था–
उधर एक मशीनी चिड़िया गिरी है।
मशीनी चिड़िया!
हैलीकॉप्टर? ओह!

अगर उनमें से कोई बचा होगा तो प्रहरी नाग-मानव उसे देखते ही डस लेंगे।
चलो मेरे साथ!
उड़ती चिड़िया में आग लगी थी।

उधर द्वीप के प्रहरियों ने हैलीकॉप्टर को घेर लिया था–
आह...

??

एक नाग हैलीकॉप्टर सवार के गले से लिपट गया, लेकिन–
ठहरो! रुक जाओ!
न..नहीं!

नागराज ?
ओह, तो तुम मुझे जानते हो।
नागराज ने उसे हैलीकॉप्टर से बाहर निकाला। उसकी टाँगें कुचल चुकी थीं–

बुरी तरह घायल वह आश्चर्य से बोला–
नागराज! तुमसे इस तरह अचानक मुलाकात होगी, सोचा भी न था। मैं तो नागमणि द्वारा तैयार दूसरे नागराज की ही नीलामी में आ रहा था।
नागमणि! दूसरा नागराज? क्या कह रहे हो? कौन हो तुम ?
नागमणि के बारे में जानने के लिए पढ़ें नागराज का प्रथम कॉमिक्स–'नागराज'

पश्चिम जर्मनी के कुख्यात अपराधी हुड का प्रतिनिधि, लीवर...
...हमें प्रोफेसर नागमणि ने गोवा में आमंत्रित किया है... वह एक बार फिर...एक हथियार के रूप में दूसरे नागराज...की नीलामी...करना चाहता है। हम दूसरे नागराज का सार्वजनिक प्रदर्शन भी देख चुके हैं...

...इस बार उसने अपने हथियार का नाम 'नागदंत' रखा है, नागराज। और नीलामी में भाग लेने वाले कुख्यात अपराधियों के सामने उसका विश्वव्यापी सार्वजनिक प्रदर्शन करके वह नागराज यानी तुम्हें भी कुख्यात कर चुका है...

...आज नागराज का नाम आतंक का पर्याय बन गया है–
...नागराज द्वारा विश्व बैंक डकैती...
नागराज द्वारा प्लेन हाई जैक
हत्यारे नागराज को देखते ही गिरफ्तार करो

...वे सभी लोग नागराज के दुश्मन बन चुके हैं, जो कल तक उसे देवता की तरह पूजते थे...
नागराज को मार डालो।
नागराज हत्यारा है
AIRPORT
नागराज हत्यारा है।

...वह नागराज, जो बच्चों में सर्वाधिक लोकप्रिय हो चुका था... उसका पुतला जलाने के लिए बच्चों के एक क्लब ने भी एक सभा बुलाई है–
बुराई के प्रतीक नागराज के पुतले को रावण के पुतले की तरह कल भरी सभा में जलाया जायेगा।
नागराज मुर्दाबाद
पूरी कहानी विस्तार से जानने के लिए पढ़ें–'नागराज का दुश्मन'

नागराज दांत भींचे सुन रहा था-
हम भी नागमणि के...
पर नीलामी में भाग लेने
गोवा आ रहे थे कि यह दुर्घटना
घट गई... उफ लगता है,
मैं बचूंगा नहीं...
मुझे उस जगह का पता दो लीवर... जहां नागमणि... ओह!
लेकिन नागराज की बात सुनने के लिये लीवर जीवित नहीं बचा था।

ओह! इसका मतलब प्रोफेसर नागमणि एक और नागराज का निर्माण कर चुका है।—
—जिसका इस्तेमाल वह एक बार फिर एक हथियार के रूप में करना चाहता है।
नागराज को उस व्यक्ति की तलाशी के दौरान कुछ नहीं मिला।

और तब-
पुजारी बाबा, आप सब कुछ सुन चुके हैं। इस समय मेरा भारत जाना बहुत आवश्यक है।
लेकिन नागराज! तुम हमारे राजा घोषित किये जा चुके हो। तुम्हारे बाद द्वीप की बागडोर कौन सम्भालेगा।

नागकुमारी विसर्पी और विसर्पी तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे पुजारी बाबा।

और एक बार फिर आरम्भ हो गया नागराज का सफर!
मुझे इस बार नागराज को हथियार बनाने से रोकना होगा

और फिर गोवा में इण्टरनेशनल चाइल्ड क्लब के ऊपर से गुजरते हुए-
अरे! यह क्या? मेरा पुतला?

ठीक उसी क्षण नागराज बेतहाशा चौंक पड़ा-
ओह! यह तो हूबहू मुझसे मिलता-जुलता है।
निःसन्देह यही है नागमणि द्वारा बनाया गया नागराज नम्बर दो। यानी नागदंत, लेकिन ये यहां क्या करने आया है?
उसी क्षण नीचे नागदंत ने तबाही मचानी आरम्भ कर दी-
उफ़! मेरे रूप में नागदंत बच्चों में आतंक फैला रहा है।
उसे रोकना होगा अन्यथा वह तबाही मचा देगा।
और अब नागराज, नागदंत के सामने था-
ओह, नागराज! तो तुम आ ही गए। मुझे तुम्हारा ही इन्तजार था। अब मरने के लिए तैयार हो जाओ मैंने तुम्हें खत्म करने की कसम खाई है।
हत्यारे! तूने नागराज के वेष में जो कुछ अभी किया है उसकी सजा तुझे नागराज अवश्य देगा।
नागराज ने अपनी सर्प-शक्तियां नागदंत पर छोड़ीं-

नागदंत ने भी सर्पशक्ति का इस्तेमाल किया-
यह शक्ति केवल तू ही नहीं, मैं भी इस्तेमाल करता हूं नागराज!

दोनों की सर्पशक्तियां आपस में ही गुंथ गई-
हिस्स

सर्प शक्तियों से इससे नहीं जीता जा सकता। इस पर जहरीली फुंकार का इस्तेमाल कर देखता हूं।

नागराज ने जहरीली फुंकार छोड़ी-
फूंsss
ओ, जहरीली फुंकार।

नागदंत ने जहरीली फुंकार बीच में ही काट डाली-
दोनों फुंकारों के टकराते ही आग की भीषण चिंगारियां सी उठीं और रह गया केवल धुआं।

इससे शारीरिक शक्ति से ही निपट सकूं शायद?

दूसरे ही क्षण नागराज की एक जबरदस्त किक नागदंत की खोपड़ी पर पड़ी-
ठाक
उफ

नागराज हवा में जम्प लगाकर उसके कंधों पर आ खड़ा हुआ-

लेकिन तुरन्त ही नागदंत ने ठोकर जड़ दी-

धाड़

नागदंत ने पलक झपकने से पूर्व ही दूसरी तलवार निकाल ली...

ओह! इससे बचना मुश्किल है। मेरी समस्त शक्तियां इसके सामने क्षीण पड़ रही हैं।

अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा नागराज।

इसकी गर्दन धड़ से जुदा करनी होगी।

नागदंत विद्युत की सी तेजी के साथ नागराज पर पुन: झपटा–
नागराज के पास उसके हर वार का जवाब था।

नागदंत की तलवार का वार नागराज के सिर के ऊपर से निकल गया–

उसके बाद दोनों में भीषण जंग छिड़ गई–
ऊफ!
आह!
आह!

तभी–
कड़ाक
नागदंत के भरपूर वार से नागराज की तलवार दो टुकड़ों में बंट गई।

यह देख नागदंत भयानक ढंग से ठहाका लगाकर कह उठा–
हा हा हा! नागराज, अब तू मेरे हाथों से नहीं बचेगा।
??

नागदंत ने उछलकर एक ठोकर नागराज के सिर पर जड़ दी–
आह
धाड़
नागराज को पहली बार दिन में तारे दिखाई दिए।

नागदंत मौत बनकर उसके सिर पर मंडरा रहा था–
नागराज! करले अपने गुरू और भगवान को याद।
आ..ह! यह अंधेरा कैसा?

फिर इससे पूर्व कि नागदंत की तलवार नीचे आती, एक आवाज उसके मस्तिष्क में गूंज उठी-

ठहरो नागदंत!
नागदंत, पुलिस आ रही है और मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी हकीकत सब पर जाहिर हो। इसलिये जितनी जल्दी हो सके, भाग निकलो।
ओह!

उस आवाज को सुनते ही नागदंत भाग निकला-
नागराज! तुमसे फिर कभी निपट लूंगा।
उफ! मेरा सिर आ....ह

उसी क्षण सायरन बजाती पुलिस जीपों ने क्लब में प्रवेश कर नागराज को चारों ओर से घेर लिया-
वह रहा नागराज! गिरफ्तार कर लो उसे।
जाल लाओ, जल्दी।
POLICE
!!

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी-
उफ! यह क्या, जाल?
पल भर में नागराज को जाल में कस दिया गया।

जवाब पुलिस कमिश्नर ने दिया-

नागराज बुरी तरह से फंस चुका था-

नागराज चिल्लाया-

आप सब लोग हकीकत नहीं जानते। मुझे इस जाल से स्वतन्त्र कर दीजिए,कमि-श्नर साहब। मैं असली अपराधी...

उसी क्षण एक हैलीकॉप्टर के इंजन का शोर वहां गूंज उठा-

हैलीकॉप्टर से एक रस्सी नीचे गिरा दी गई –

कुछ ही देर में –

हैलीकॉप्टर नागराज को लेकर उड़ गया –
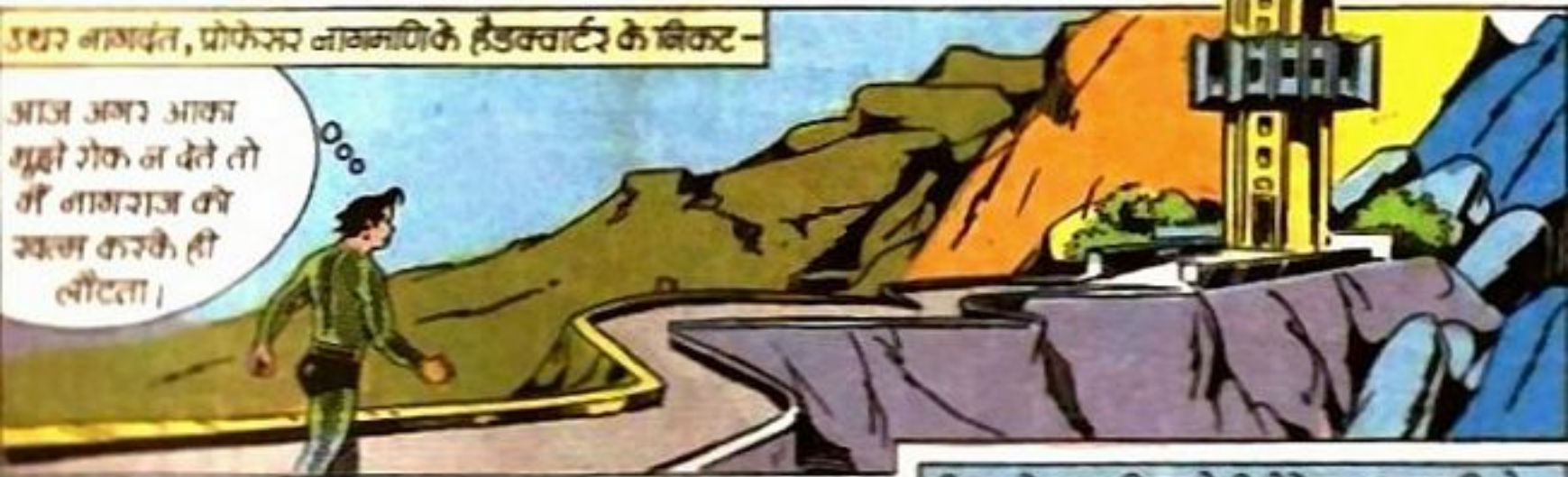
उधर नागदंत, प्रोफेसर नागमणि के हैडक्वार्टर के निकट –
आज अगर आका मुझे रोक न देते तो मैं नागराज को खत्म करके ही लौटता।

उसी संकरी सड़क से गुजरकर नागदंत हैडक्वार्टर के मुख्य द्वार पर पहुंचा ही था कि –
!!

भीतर पहुंचते ही वह एक लिफ्ट की मदद से ऊपर आने लगा –
लिफ्ट ऊपर एक गोलाकार हॉल में आकर रुकी –

लिफ्ट से बाहर निकलते ही प्रोफेसर नागमणि ने उसका स्वागत किया –
आओ नागराज उर्फ नागदंत, मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था…
…और अब यहां तुम्हें नागराज का फेस मॉस्क लगाये रखने की भी कोई मजबूरी नहीं है।

नागदंत ने नागराजवाला मॉस्क चेहरे से नोंच लिया। फिर बोला–
हां, यहां मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन आका, आपने मुझे नागराज को खत्म करने से क्यों रोक दिया?
नागदंत! क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि पुलिस या दुनिया यह जाने कि आतंकवाद का दुश्मन नागराज मर गया और आतंक फैलाने वाला नागदंत है...

...फिर अगर तुम ऐसा कर देते तो दुनिया भर में जितने भी नागराज के दोस्त हैं, वे सबके सब एक होकर हमारी बोटी-बोटी कर देने के लिये सिर पर कफन बांध कर निकल पड़ते।
नहीं नागदंत, नहीं! मैं तुम्हें नागराज बनाकर इस दुनिया के सामने लाऊंगा और दुनिया कभी नहीं जानेगी कि असली नागराज मर चुका है।

लेकिन अब तक तो नागराज जेल पहुंच चुका होगा।
दुनिया की कोई जेल नागराज जैसी हस्ती को कैदी नहीं बना सकती, नागदंत।

वह जल्दी ही जेल से भाग निकलेगा और तब उसे केवल अपने दुश्मन यानी तुम्हारी तलाश होगी।
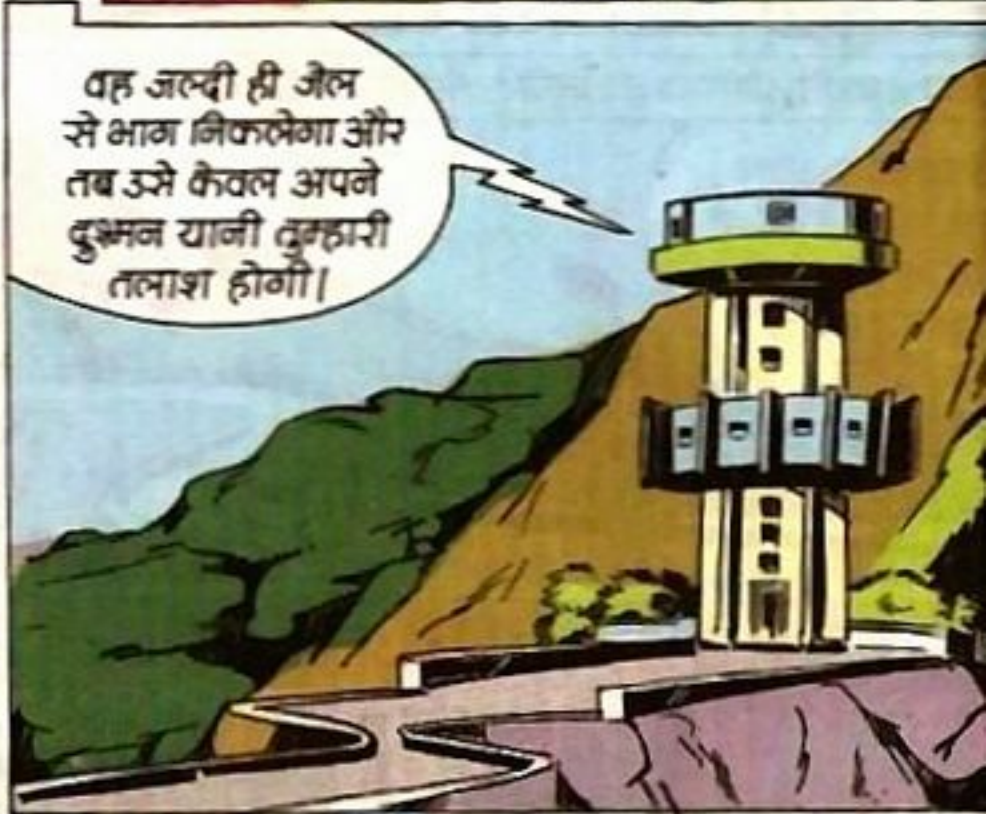
और अगर तुम यह समझते हो कि तुम नागराज को खत्म कर सकते हो तो यह तुम्हारी भूल है। तुम दोनों की ही शक्तियां असीमित हैं।–
...इसलिये नागराज को समाप्त करने के लिये मैंने तुम्हारे साथ-साथ ताखी का भी निर्माण किया है।
ताखी ??

नागदंत को लेकर प्रो. नागमणि लिफ्ट में सवार हो गया-

आओ, तुम्हें दिखाता हूं। तारवी को हल्की सी ठंड भी बर्दाश्त नहीं है...

लिफ्ट ऊपर एक छोटे से केबिन में पहुंच कर रुकी-

इसलिये तारवी को हीटर युक्त एक शीशे के चैम्बर में बंद करके रखा गया है, ताकि पूरी गर्मी उसे मिलती रहे...

... इस समय हम उसी चैम्बर के बाहरी हिस्से की गैलरी में हैं। यह दीवार बीच से हटते ही तुम तारवी को देखोगे।

दीवार हट गई और तारवी पर निगाहें पड़ते ही नागदंत के मुंह से विस्मय भरी चीख निकल गई-

उफ्! यह तो साक्षात् यम का रूप है।

यह नागराज की मौत है, नागदंत।

उधर नागराज को एक खास किस्म की गैस सुंघाकर बेहोशी की अवस्था में एक लोहे के मजबूत बॉक्स में कैद कर दिया गया। फिर जब उसे होश आया तो—

उफ़! यह क्या? इन लोगों ने मुझे कहीं कैद कर दिया है।...

...यह कोई लोहे का बक्सा लगता है। उफ़! मैं तो इसमें हिल भी नहीं पा रहा।...

...इस बार तो बुरे फंसे नागराज बेटे। कम्बख्तों ने बड़ा मजबूत जाल बुना है तेरे लिये।...

...लेकिन मुझे किसी भी तरह इस कैद से निकलकर जेल से फरार होना है। और नागदंत की अस-लियत सबको बतानी है।...

...मगर यह मजबूत सन्दूक... इसे शायद मैं न तोड़ पाऊं। उफ़...

बाबा गोरखनाथ! मुझे रास्ता दिखाओ।

अगले ही क्षण एक अलौकिक चमक के साथ गोरखनाथ का अक्स उभरा—
नागराज। अब वो समय आ गया है जबकि तुम्हारे भीतर इच्छाधारी शक्ति का संचार हो चुका है।
इच्छाधारी शक्ति?

हां, नागराज! अब तुम अपनी इच्छा से खुद को किसी भी रूप में परिवर्तित कर सकते हो...
...आज से तुम इच्छाधारी नागराज हो।

इतना कहने के साथ ही गोरखनाथ का अक्स हवा में लुप्त हो गया –
इच्छाधारी नागराज, वाह! अब यह बंधन मैं तोड़ डालूंगा

दूसरे ही पल नागराज ने इच्छित रूप की कल्पना की और –
ओह! मेरा शरीर सांप में बदल गया!

अब इन छिद्रों में से मैं आसानी से बाहर निकल सकता हूं!
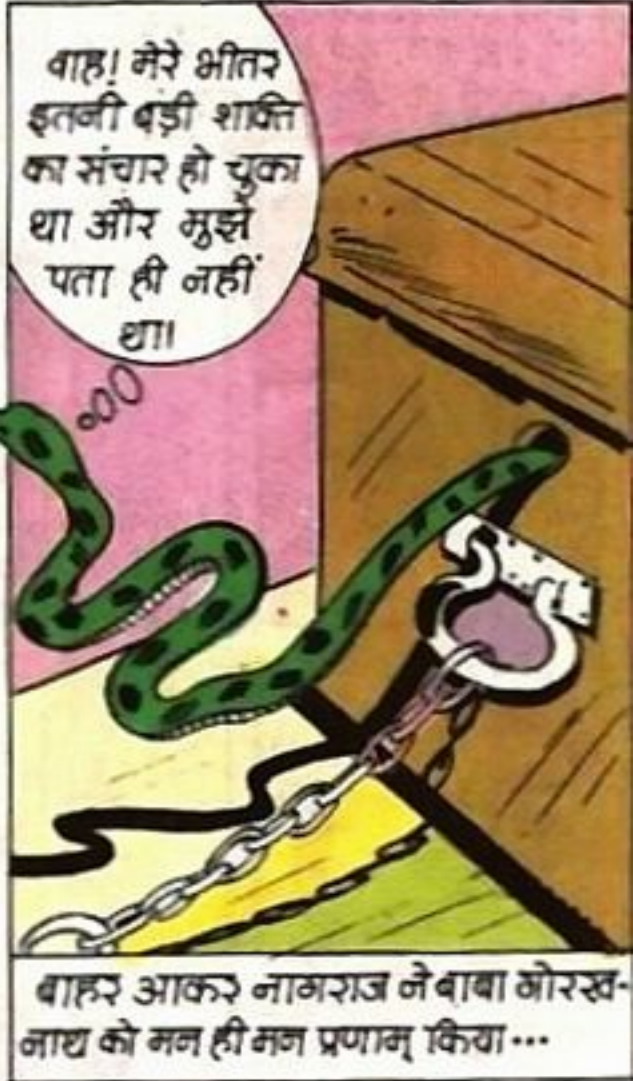
वाह! मेरे भीतर इतनी बड़ी शक्ति का संचार हो चुका था और मुझे पता ही नहीं था!

बाहर आकर नागराज ने बाबा गोरखनाथ को मन ही मन प्रणाम् किया...

... और अब नागराज को जेल की वह कोठरी भला कहां कैद करके रख सकती थी –

ओह! ये बेचारे क्या जानें कि नागराज तो कब का इनकी कैद से आजाद हो चुका है।

दूसरे ही पल –
स... सांप
इन्हें बेहोश करने के लिये तो मेरी हल्की फुंकार ही बहुत रहेगी।

फूं...sss

अचानक नागराज के मस्तिष्क को झटका सा लगा–

ही पल नागराज ने ड्राइविंग
की ओर झांका–
ड्राइवर कहाँ गया? यह तो बेहोश पड़ा है।
नागराज की छटी इंद्री खतरे का सिग्नल देने लगी, और–
कूदो
ट्रक खाई में आ गिरा–
उधर ट्रक से कूदने के बाद नागराज अभी सम्भला ही था कि–
मुझ से तो मिलते जाओ नागराज।
से पूर्व ही नागदंत ने नागराज को
दिया–
उफ! यह क्या?
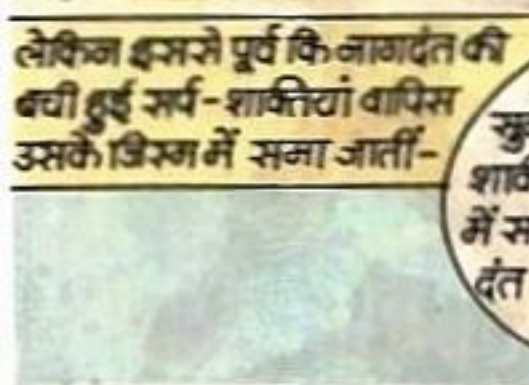
लेकिन इससे पूर्व कि नागदंत की बची हुई सर्प-शक्तियां वापिस उसके जिस्म में समा जातीं-

* नागानन्द : नागराज के जिस्म में वास करने वाले सर्पों का सेनानायक है।

नागराज की आवाज सुनते ही वह सरसरा-
नागराज के शरीर से बाहर निकला
नागदंत की वापिस लौटती सर्पशक्तियों
साथ...
...नागदंत के जिस्म में समा गया।

इधर नागदंत का मस्तिष्क तेजी के साथ चल रहा था -
यही मौका है, मुझे भाग निकलना चाहिये। नागराज पाताल तक भी मेरा पीछा करेगा। और यही मैं और नागमणि चाहते हैं।
ओह! भाग रहा है, लेकिन आज मैं इसका पीछा पाताल तक भी नहीं छोड़ूंगा

नागदंत झाड़ियों में खो गया -
तुम कहीं भी क्यों न जा छिपो नागदंत। नागानन्द के मस्तिष्क से मेरा संबंध लगातार बना हुआ है। आज नागराज तुम्हें ढूंढ़ निकालेगा।

नागदंत प्रोफेसर नागमणि के हेडक्वार्टर पर पहुंच चुका था -

नागमणि ने तुरन्त एक अन्य टी.वी. स्क्रीन रौशन कर दी -
वह देखो!
ओह!

मैंने मुख्य द्वार खोल दिया है। अब लिफ्ट उसे लेकर सीधा काले शीशों के चैम्बर में छोड़ेगी, जहां तामी उसका स्वागत करने के लिये तैयार है।
तो यहां बनाया है नागमणि ने अपना नया हैडक्वार्टर।
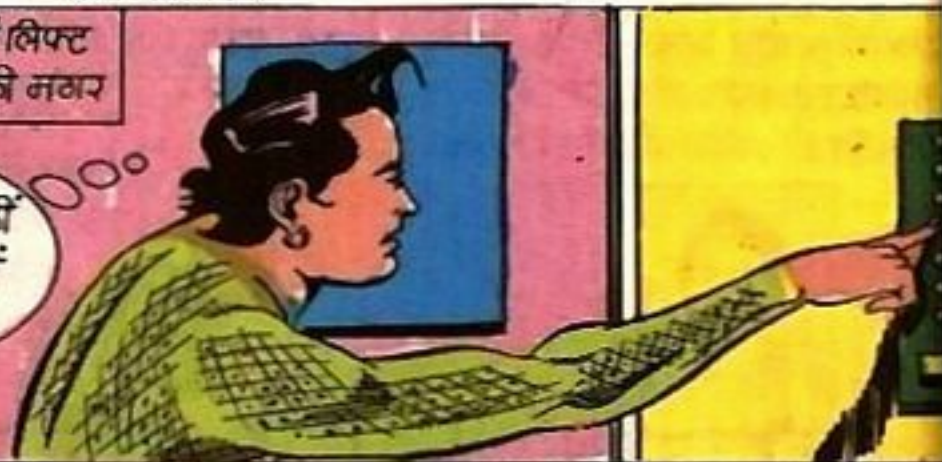
नागराज के सम्भलने से पूर्व ही ताखी ने भयानक ढंग से फुंकारते हुए नागराज को अपने शिकंजे में कस लिया-

उफ! इसकी फुंकारों से दम सा घुट रहा है।

इसके डंक से बचना होगा।

ताखी ने अपने भयानक विष बुझे दांतों को नागराज की ओर बढ़ाया-

…राज ने एक शक्तिशाली घूंसा ताखी के जबड़े पर मारा—
तुम्हारी टक्कर नागराज से है दैत्यराज!

ताखी का दूसरा मुंह नागराज की ओर लपका—
ओह! दोहरी मार! ऐसे खेल में ही मजा आता है मुझे।

ताखी के दोनों मुंह एक साथ नागराज पर झपटे, लेकिन—
धरती को अभी नागराज की जरूरत है शैतान!

…फर्श पर कलाबाजी खा गया, और—
ओह! अगर इसने दो-चार पलटियां और लगा लीं तो मेरी पसलियों का भुरता बन जायेगा।

उफ! मेरा दम घुटता जा रहा है!
की गर्मी... उफ!
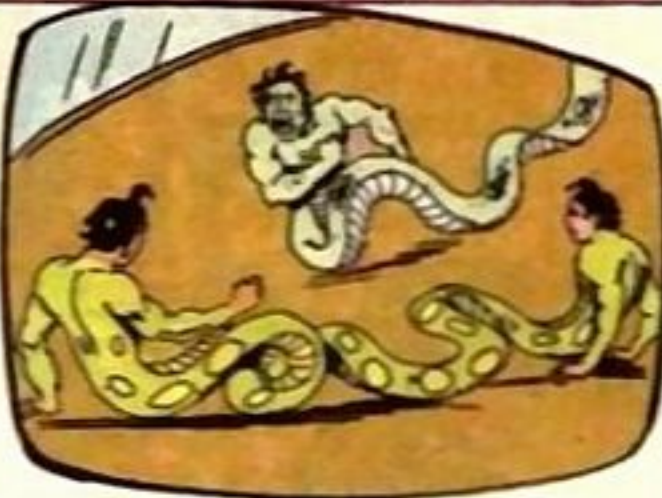
और दूसरे ही पल प्रो. नागमणि व नागदंत ने एक बेहद हैरत अंगेज कारनामा होते देखा-
अरे! यह क्या? नागराज ने अपना रूप बदल लिया! इच्छाधारी नागराज!
इच्छाधारी नागराज
तुम्हारा पाला इस बार नागराज से नहीं, इच्छाधारी नागराज से पड़ा है प्यारे!
हिस्स
नागराज ने तारवी के दोनों हाथ कंधों से उखाड़ फेंके-
तत्पश्चात नागराज ने तारवी को हवा में उठा लिया-
तुम्हें हल्की सी भी ठंड बर्दाश्त नहीं, है ना!
नागराज ने तारवी को शीशे की दीवार पर खींच मारा-
खनाक

गामी का शरीर टॉवर से नीचे
ाई में गिरने लगा –

अब तुम्हारा नम्बर है नागमणि! और नागदंत, तुम्हें तो मैं जीवित ही अपने द्वीप पर ले जाऊंगा।

नागराज टॉवर की दीवार पर उतर गया और नीचे की ओर बने गोल केबिन की ओर रेंगने लगा –

उधर नागमणि वह दृश्य दे
ही चीख कर भाग पड़ा था
उसने ताखी को मार
दिया है। उसके भीतर इच्छा
शक्ति का संचार हो चुका
उफ! मैं तो भूल ही गया
कि आज ही नागराज
धारी शक्ति का स्वामी
जायेगा। भागो नागदं
जान बचाओ।...

ठीक उसी पल नागदंत के जिस्म से नागानन्द बेहद तेजी के साथ बाहर निकला –
उफ! यह क्या?

नागमणि के मस्तक पर नागानन्द क
वार –
आऽऽह!
आका!

यह देखते ही नागदंत चीखता हुआ नागमणि की ओर लपका-
... नहीं आका, नहीं। मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा। तुम्हारा सारा जहर चूस लूंगा।
आ...ह! अब मैं नहीं बचूंगा।

नागदंत ने पागलों के समान नागमणि के मस्तक से विष चूसने की चेष्टा की-
म... मैं नहीं बचूंगा...नाग.. आह.. जीवन भर सांप और भयानक... विषों पर.. म.. मैंने खोज की.. अ..और मेरा अंत भी हुआ तो ..जहर से.. आह!
नहीं, आका!

नागदंत की पीठ पर पड़ी ठोकर ने उसे हवा में उछाल फेंका-

नागमणि जिन्दा रहा तो विश्व में जाने कितने तुम जैसे नागराज और पैदा होंगे। उसका मरना आवश्यक है नागदंत!
त...तुम! तुमने मेरे आका को मार डाला।

हां, और तुम्हारा दिमाग दुरुस्त करने के लिये अब मैं तुम्हें अपने द्वीप पर ले जा कर कैद करूंगा...
...जहां से तुम चाहो भी तो स्वेच्छा से नहीं निकल सकते।
उफ

मुझे भी यह टॉवर तुरन्त छोड़ना होगा।

उफ़! नागरस्सी का प्रयोग करूं, अन्यथा नीचे गिरने पर मेरी हड्डी-पसली नहीं बचेगी।

नागदंत नागरस्सी पर लटक गया -

टॉवर से कूदकर नागराज भी नागरस्सी पर झूल गया -

इसी पल एक भयानक विस्फोट के बाद टॉवर टुकड़ों में बिखर गया
धड़ाम
बाल-बाल बचे!

नागदंत ने सर्प रस्सी पर झूलते हुये नागदंत को दबोच लिया –
नागदंत! तुमने मेरा नाम लेकर लोगों में बहुत आतंक फैलाया है। अब तुझे अपने वायदे के अनुसार टी.वी. स्टेशन लेकर चलूंगा।

नागराज, नागदंत को साथ लिये नीचे कूद पड़ा –
ओह्ह!

नीचे गिरते ही नागदंत ने भागने की चेष्टा की...
अभी मुझे भाग निकलना चाहिये।
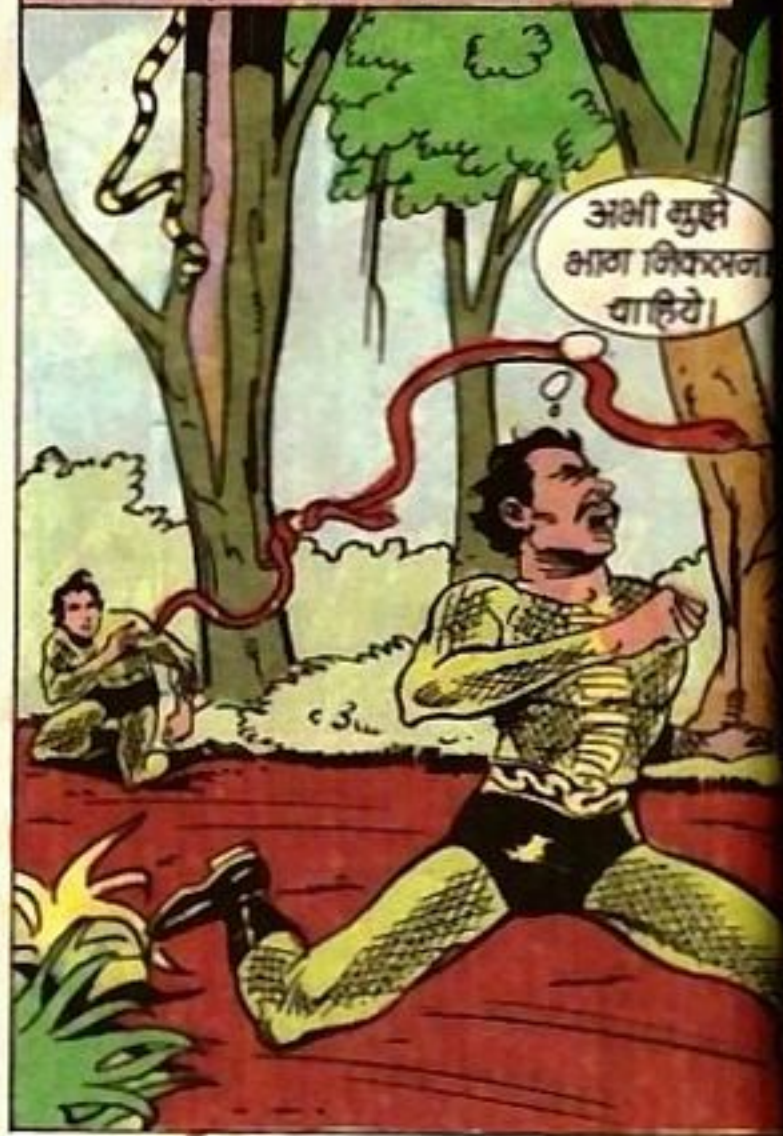
ओफ्फ! यह क्या?
भागता कहाँ है बेटे नागदंत!

फिर नागराज ने उसे उठने नहीं दिया –

इच्छाधारी नागराज

नागराज की वह मार इतनी शक्तिशाली थी…
कि कोई दूसरा होता तो उसकी गर्दन छाती में घुस जाती, लेकिन नागदंत केवल बेहोश हो गया।

अभी दूरदर्शन का राष्ट्रीय कार्यक्रम समाप्त नहीं हुआ होगा।

मैंने अपना वायदा पूरा कर दिया है दोस्तो। यही है नागदंत, जिसने नागराज बनकर स्विसबैंक में डकैती डाली और विमान हाईजैक के साथ सैकड़ों लोगों को मार डाला। इसका निर्माणकर्ता नागमणि भी समाप्त हो चुका है।…

…और यह मेरे कब्जे में है, मैं इसके विकृत मस्तिष्क को सुधारने की चेष्टा करूंगा। और कानून के रखवालों से प्रार्थना करूंगा कि इस बार वो दूरदर्शन को घेरने की चेष्टा मत करें, क्योंकि मैं नागदंत को अपने साथ लेकर ही जाऊंगा।

नागराज का मैसेज सुनते ही पब्लिक में हर्ष की लहर दौड़ गई—
वाह! आखिर नागराज ने अपने माथे पर लगा कलंक धो ही डाला।
मैं तो पहले ही समझ गया था कि नागराज ऐसा नहीं कर सकता यह जरूर किसी शैतान का काम है।
नागराज, यू आर ग्रेट!
बच्चे खुशी से उछल पड़े—
CHILD CARE PARK
नागराज! सुपर हीरो। यू आर रियेली सुपर हीरो नागराज।
हुर्रे!!
जहां नागराज का पुतला जलाया था, वहीं नागराज का एक दिन अभिनन्दन भी करेंगे।
और इधर नागराज अपने हैलीकॉप्टर पर उड़ा आ रहा था—
नागमणि की मृत्यु की खबर पाकर कल होने वाली नागदंत की नीलामी में भी अब कोई नहीं आने वाला। इसलिये अब यहां रुकने से कोई लाभ नहीं।
समाप